

SRT+NEW. L.

BLAT PAVAPBHAI PAVI AVE SA KAMPANA VIDHI

NEPAL GERMAN MANUSCRIPT PRESERVATION PROJECT

P.P. KAMSAR

MS No.

Rolling No.

E 22807

ATHA KHATAKEYA VIDHI.

AUTHOR:

No. of leaves 30

Compl. Size in cm 14.2 x 6

Reel No.

E 1138

Date of filming 31-12-80

Remarks: Paper ~~damaged~~ damaged by worms - rats breaking others.

Paper: Nepali Indian ~~unmade~~ made. loose. Thānapu ~~bound~~

Date NS

VS

Shaka

LS

Colour yellow

Colour Slide No.

Both sides of the MS have been smeared with Harilala.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विमलका ॥ मन्त्रतया तन्मन्त्रकः ॥ तन्मन्त्र  
मन्त्रं वदन्तान्मन्त्रान् ॥ मन्त्रं मन्त्रमीयान्मन्त्र  
मन्त्रे ॥ मन्त्रं ॥ मन्त्रं ॥ मन्त्रं ॥ मन्त्रं ॥ मन्त्रं ॥  
मन्त्रं ॥ मन्त्रं ॥ मन्त्रं ॥ मन्त्रं ॥ मन्त्रं ॥ मन्त्रं ॥

मन्त्रं निश्चयि ॥ मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं  
मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं  
मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं  
मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं  
मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं

उक्तं यक्षगनमस्तु न नाशय कर्म आवसीव  
न नाशय न नाशय न नाशय न नाशय न नाशय  
मवात् इत्येतन्निवमस्तु न नाशय न नाशय  
धनं न नाशय न नाशय न नाशय न नाशय

यक्षगनस्तु न नाशय न नाशय न नाशय  
न नाशय न नाशय न नाशय न नाशय न नाशय  
न नाशय न नाशय न नाशय न नाशय न नाशय  
न नाशय न नाशय न नाशय न नाशय न नाशय

नमः कुरु कुरु नमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं  
॥ नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो  
दलदा याज कि यन नमः ॥ ॐ नमो नमो  
नमो नमो नमः कुरु नमो नमो नमो नमो ॥ ॥ कुरु ॥

दविष्वाकमनु ॥ ॐ नमो नमो नमो नमो नमो  
नमः ॥ ॐ नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो  
नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो ॥ नमो नमो ॥



(न) व. सातके  
! क्म नरा रः  
(अ) न ना न  
अ य ग य  
! धरु  
! कूज ! विधि धून क उ ग गु न य ल

(ग) ल जू द न द्या ख  
न दू र क  
(क) नू ल दू य  
! न क ग ख उ न म न  
वू न क नू ल नि धि धा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यदा भिक्तं ॥ गुण विहा  
येताय नमः न च नैव क न किञ्चिद  
व न धून उ उ म धा उ धू नि ॥

उत्तम ॥ ॐ य गु वा मा य वि द न द वि न क म य ध  
म द न न ज वि व द या नू ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 वनय विषय २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 यव १००० ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 वि ॥  
 १ मता कान्तु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

४ अग्निसूत विषयमात्र ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 सधृय ॥ ॥ मता कान्तु ॥ वि ॥  
 वि ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 नाथल मता कान्तु ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 १००० कान्तु कान्तु कान्तु ॥ मता कान्तु ॥  
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



नय दानकं पूजितं ॥  
 स्वातन्त्र्य ॥ मदासि. कान्तज्ञानया न गतं. तायुनि  
 तिरुयानरत्न. सिद्धास. युक्तुल. स्वतन्त्रमरण. अग्नि  
 ॥ सङ्गतविय. तानन. स्वर्णित ॥ कथयामन्नुनजयमाल  
 ॥ ॥

॥ श्री ३ नृपनाथयनन ॥ कप्रमात्वायाश्च जगत्पाना  
 ट्यनया कश्चाय कनूलमान इना ॥ दयाया कक्षाः  
 ननिष्कसर्ग ॥ आश्वन. दाक्षास्वा. नायथात्रवि  
 काजसादजा नय. मनवियक. निमिकायमाः

ल॥ मास दिन व स ग्रे न उः त य, सूवाना, सि वि,  
ब्रूम हाउ खा उ ध क र न क ॥ धूप कर्पूर सि  
क्लास घृघ्न, साग उ ति न हाउ, पाव वि हाउ सा  
हाउ न य, सूवाना ल उ क्ता य ॥ धूप क र क ॥ स न

सान यान वि श्राय न, दारु ल सान नाय पाव वि हा  
उ, ना ट व न या क मा टा न य, पूजा ज प या य क  
ब्रूल याम कु ल पाव वि या उ, करू पा उ कू न क  
रु ना क्ता हाउ कू न क ॥ वि दः वि उ गू व ग्ध ॥ ॥

आदित्यवानरुद्र अलग्नसिमास पंचामृतस  
 दिनन धृष दीप नेवद्य पंचायवानलभूजा  
 यादताथ युगुनि इथकाताथ पंकुक्रु  
 इथकाताथ युगुनि युगुनि कायाताथ युगुने

ग्वक्तयवतावान २

वद्य स्नान अग्नसि सिक्ता सनाय काकाया  
 १० गलसप्तान कउ दृजायाय अग्नयवताः  
 शामनु पूजा मागिगन कालजावालजाक  
 संचाययुनि क्री १ मालसा निचाहनयथयु  
 वाहन १

विधूयतातकवचतथनमनस्ययदिजना  
यच्छादातावानांछापमानवचनय  
मानहिमयनाथअनानिकायगुलि  
विक्रयजानयइ॥मनु॥कथा२काववा

कावाकावविजनायुनीगनाहंरुद्रखाहा॥  
धन१०८अकर्मकृचनधूपविय॥कायनि  
यकुखालययकथदातायदवदवध  
यप्रकर्मकृनकधूपवियमनुयजवाजा॥



ॐ हं हं हं वीनवता हं हं हं हं ॥ इत्युत्तराय  
क्रमम् ॥

ॐ हं हं हं वीनवता हं हं हं हं ॥ इत्युत्तराय  
क्रमम् ॥

स्यैकं यद् यिजः स्वात्मकं ॥ नवमां सुभाय ॥ ॥  
ॐ हं हं हं वीनवता हं हं हं हं ॥ इत्युत्तराय  
क्रमम् ॥

आनन्दः सर्वममलमिदं वस्तु ॥ १ ॥  
 (वस्तु सर्वममलमिदं वस्तु ॥ १ ॥) ॥ १ ॥  
 वयं यवस्तु ॥ १ ॥ ॥ १ ॥  
 कर्तुं नृपमहामेव वायुमानः ॥ १ ॥

महिमायः प्रवृत्तः ॥ १ ॥ ॥ १ ॥  
 सः नाटिकाः सः कथयतः ॥ १ ॥ ॥ १ ॥  
 संलभ्यते नृपायः ॥ १ ॥ ॥ १ ॥  
 कः ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

कौं कौं कौं कनू नृपमकारे तजय म विवदु  
न वृ कि सुहिगाज कौं कनू अ यवननरू  
दातः कनू रू कनू न रूर बाज कनू ॥  
धन १०० गंदारन अ कन धमकुन जयनः

२५ कन १ दाख ३१  
यावद्वयः केने ४१०८ ॥ थदा रुत प्रकम न  
कनल चूचके ॥ गंकीपनम ॥ ॐ ज्ञां वां  
मुं हं ३६६ ३ दहि २ गा ॥ अवन २१ ॥ ॥  
३ दिगम्बक ॥ उंदल २ ला वग्वादिनिमो





६ रुद्र रुद्र रुद्र स्वाहा वा ॥ धन १०॥ लं स्व प्रथमान क  
वा दयन वा विजाय मनु सु मां कुं व २ आवे रुं ३ रुद्र  
३ स्वाहा वा ॥ धन २१ ॥ रुं २१ ॥ धन ॥ ५ उं ३ रुं ३  
वज्र आ वरुणा हय रुं ३ रुद्र ३ स्वाहा वा चोला

हृत्पुष्पं जयनयनं १०८ ॥ देवलिपियक  
नयनं जयनयनं ॥ ध्यानलिपिजयनयनं  
जयनयनं ॥ ॥ ध्यानलिपिजयनयनं  
जयनयनं ॥ ॥ ध्यानलिपिजयनयनं

मयुक्तान्, मान्ति, उच्यते, कान्, पुन, कथं न  
 लान्ति, महिममं, स, थ्यान्, गन्, क, कूट्यान्  
 गन्, ॥ धनं, सम, गन्, कूट्यान्, ॥ धनं, स  
 पुन, धनं, ॥ ८ ॥ ॥ अकान्, नन्, ॥ १० ॥

कथयाकाव्य

आग ॥ उच्यते, हि, या, क, अकान्, नन्, ॥ अकान्, नन्,  
 का, नन्, साधल, धनं, कूट्यान्, ॥ धनं, कूट्यान्,  
 १०॥ ॥ आग, उच्यते, क, कूट्यान्, ॥ धनं, कूट्यान्,  
 अकान्, नन्, ॥ १० ॥



वीरयामनु॥ वैजात्रि कुं कुं हनुमन्मल  
 रेववायसदा निवायन म॥ ३॥ कुं स्वाः  
 हागुयुतजयनपवीनयामनुनमः ॥ ४॥ वा॥  
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

लक्ष्मणय २ ह्रीं ज ४ रुट् रुट् ज २ आम् ४ ह्रस्व  
 नजय १ ॥ नैलन नक ४ कनू लक्ष्मण ॥ ॥

(ह्रीं ग वृं २ नमः ३ स्वाहा ४ दीपनमनु ॥ ॥

[illegible]

ग ॥ ॥ अथ स्वातक्याविधिः ॥ गनिश्चनवानसूत्रं  
गवानसूत्रं तज्जगत्सिद्ध्याय ॥ कथयान्नपुजाया  
ययक ॥ जयमानस्य ॥ अमुकनाटकस्य ॥ शैववर्णनः  
वीक्षावशं कथयन्ताय सिद्धिनिमित्तं ॥ विधिः ॥ अथ

(६४) स्व. द. धूप गुरु ह्येक  
 एक गुरुत महा मोर ॥  
 रत्न रत्न ॥ गुरुत स्व. गुरु. ध. य ॥  
 रत्न रत्न य. के. व. (६४) द. धूप

गुरुत ॥ गुरुत धूप गुरुत २१ दारुतः  
 २१ स्वातके धूप गुरुत स्वातके धूप गुरुत २१  
 वधियके धूप गुरुत २१ गुरुत स्वातके धूप ११  
 मनु ११ वधु ११ धियानिनी मनु ११ वधु ११ धूप ११

जं. ग. जिताये नमः ॥ १ ॥

जयाये नमः ॥ जं. विजयाये नमः ॥ जं. अयवा जिता  
ये २ ॥ जं. नन्दाये २ ॥ जं. शूद्राये २ ॥ जं. जयाये २ ॥ जं.  
हीमाये २ ॥ जं. दिव्यागि नो २ ॥ जं. महायागे नो २ ॥ जं.  
सिद्धियागि नो २ ॥ जं. ग. ल. ग. यो २ ॥ जं. ल. कि नो २ ॥

जं. कालनाये २ ॥ जं. उर्द्धक. ल. नमः ॥ जं. नि. ल. वः  
यो २ ॥ जं. ग. री. नाये नमः ॥ जं. घा. नाये २ ॥ जं. मू. ला  
ये २ ॥ जं. यव. नाये २ ॥ जं. शी. व. ल. ये २ ॥ जं. महानः  
नाये २ ॥ जं. काला. मू. खे २ ॥ जं. पि. ल. वि. नो २ ॥ जं.





२॥ ज्ञांवीवस्यये २॥ ज्ञांमहाकाले २॥ ज्ञां कं का  
 ले २॥ ज्ञांविद्वानननाये २॥ ज्ञांकाधवाये २॥ ज्ञां  
 हीमस्यये २॥ ज्ञांवायवगये २॥ ज्ञांरुचानये  
 २॥ ज्ञांवाक्त्रये २॥ ज्ञांवेक्ये २॥ ज्ञांवावेकाये

२॥ ज्ञांलील्यये २॥ ज्ञांवावाक्त्रे २॥ ज्ञांनावसिक्त्रे २॥  
 ज्ञांनिवाहलेनम ॥ ५४ ॥ मूल ॥ ज्ञांजं वृंरुं नम ३  
 खाहा ॥ ५५ ॥ वलिविय ॥ ज्ञांवाक्त्रे ॥ मूल ॥ धनमू  
 कतदाहालधूर्यनार्यधिस्यजयधं ॥ १०८ ॥ जया

वदवधियर्कन ॥ धूय. दा. य. नेवश. जय ॥ नन्दिम  
 हाकाल ॥ मृत ॥ कय मूल ॥ १०८ ॥ कृष्ण ॥ ख. प्र. पू. डा  
 हंर. क. ॥ वा. सा. क ॥ गु. न. क. य. या. न. द. व. क. पा. य. क. ॥  
 व. क. न. क. या. ॥ व. नि. ध. य. ॥ अ. क. न. द. वा. ख. ज. या. न. या

गु. द. न. क. वि. दि. व. म. ज. न. क. का. य. ॥ व. म. न. य. म. ता. व.  
 ॥ सा. दि. ध. य. ॥ अ. वा. र्थ. य. द. व. क. सि. न्ध. ख. न. क. या.  
 व. का. य. ॥ अ. ख. अ. ज. न. ॥ द. व. क. नि. या. अ. नि. या. या. ॥  
 म. ता. वि. य. ॥ कृ. ण. हा. नि. या. य. ॥ ॥ स्वा. न. क. न. ल.

दावर्मचमरु कउतकं गनयय ॥ द्याघल स्वप्नः  
मकु आदिनधूय रुय ॥ द्याघल न द्यावकी ॥ नकुजी  
नक ॥ नासिचक धर्म नासिय ॥ व्यासयाचक ॥  
कयदाय ॥ ॐ ॥ अस्माय रुद्रादिना वदुर्मस्मान

धूपधन ॥ ताउर्न ॥ गिवम ॥ २१ ताटकास ॥ २१ दद  
यस ॥ २१ ॥ स्वातकं गत दावलिकाय मकु ॥ ११ आगद  
कु २ स्वाहा ॥ ११ ॥ लंखजयन र्यता नक ॥ कय  
नयाधूय ॥ ११ ॥ स्वना ॥ ११ ॥ उगुलि ॥ ११ ॥ तिज्ञास

ता१ म० साखल ॥ सोहयध्वनीया, विजनामानस्वा  
 दधूय, सिद्धिमदनसासिद्धिदय, मोहालध्वनीयाम  
 नु० जयलथ ॥ १०८ ॥ ॥ नैऋतं ॥ साह ॥ लाक  
 भादनीमनु ॥ ॥ नैऋतं ॥ नैऋतं ॥ नैऋतं ॥ यजमान

स्यमूकनामनाटकस्य सिद्धिदाह २ दर्शनम  
 ततः कर्मरुने कुरु २ ने श्रीमों ४ कीं मुं स्की सा  
 हाना २ कुरुता ॥ नयका ॥ प्र २ २ को ॥ ज  
 यलं हाने ताकमारुनीमकुभा ॥ ने श्रीमों ४ कीं

मुं स्की शीनक २ म्वाहा ॥ मं कुरुनाशनमकुभा ॥  
 तलनाजनायधूयाचिरं शिको युवादिनि  
 एकट ४ यूनन विपूनकृतधूयास्सर्वप्रकृतिवज  
 हा ॥ कुरु ॥ पिवाकयातधूपध ॥ कुरुमव नदि ॥

[illegible]

१०८ ॥ कनूदायाल कूवक कनूदाइरा अवर्ग ॥ ॥  
कनिमाखायाखेजरा नाटकाय ॥ ॥